

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 11 अध्याय 12: सत्संग की महिमा

24 September 2026



भगवान् श्रीकृष्ण उद्धव को सत्संग की परम शक्ति प्रकट करते हैं — कैसे सन्तों का संग उन्हें किसी भी अन्य साधन से अधिक निश्चित रूप से प्राप्त कराता है, कैसे ब्रज की गोपियों ने भी केवल शुद्ध प्रेम से उन्हें पाया, और कैसे सम्पूर्ण हृदय से उनकी शरण लेकर मनुष्य समस्त भय से मुक्त हो जाता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

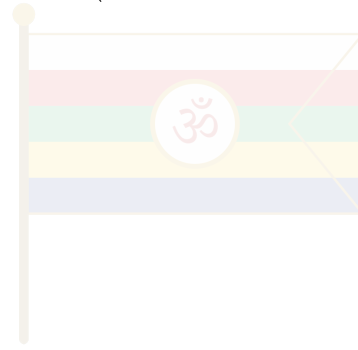
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है, जो श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं तथा शिक्षाओं के माध्यम से एक भक्तिपूर्ण यात्रा है। पिछले अध्याय में भगवान् ने सच्चे साधु के लक्षण तथा प्रेममयी भक्ति के अनेक रूप प्रकट किए। अब वे वह रहस्य प्रकट करते हैं जो प्रत्येक तकनीक तथा साधन से ऊपर खड़ा है: सत्संग, सन्तों के संग की शक्ति। स्वयं के प्रयास का कोई भी मार्ग, वे उद्धव से कहते हैं, उन्हें उतना निकट नहीं लाता जितना भक्तों के बीच पलने वाला सहज, निश्छल स्नेह। इसके प्रमाण में, वे अनपढ़ गोपियों, ब्राह्मण-पत्नियों तथा यहाँ तक कि मूक प्राणियों का उदाहरण देते हैं, जिन सबको सन्तों के संग में जगे हुए अकृत्रिम प्रेम ने उनके समीप खींच लिया। वे स्मरण करते हैं कि मथुरा-गमन के पश्चात् गोपियाँ किस प्रकार उनकी विरह-व्यथा में संसार को पूर्णतः विस्मृत कर बैठीं। वहाँ से वे उद्धव को एक सम्पूर्ण

आत्मसमर्पण की ओर मोड़ते हैं — विधि-निषेध की भूलभुलैया त्यागकर अपना सर्वस्व निःसंकोच सौंप देने का आह्वान करते हुए। जब उद्धव के मन में अन्तिम शेष शंका उभरती है, तब भगवान् सीधे उसका समाधान करते हैं, यह बताते हुए कि सद्गुरु की निष्ठापूर्ण सेवा किस प्रकार एक ऐसी तीक्ष्ण धार तैयार करती है जो अहंकार की गाँठ को अन्ततः काट डालने में समर्थ होती है।

अध्याय की जानकारी

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 11 (एकादश स्कन्ध)
- अध्याय: 12 (द्वादश प्रवचन)
- अध्याय शीर्षक: सत्संग की महिमा
- प्रधान वक्ता: श्रीकृष्ण, उद्धव को उपदेश देते हुए; समस्त सुकदेव गोस्वामी द्वारा राजा परीक्षित को कहा गया
- प्रधान श्रोता: उद्धव; तथा, कथा के ढाँचे में, राजा परीक्षित
- मुख्य स्थान: द्वारका, भगवान् के प्रस्थान की पूर्वसंध्या पर उद्धव के साथ संवाद में
- केन्द्रीय विषय: सन्तों के संग की परम शक्ति, वह शुद्ध प्रेम जिससे गोपियों ने भगवान् को पाया, केवल उनकी शरण लेना, तथा वह ज्ञान की कुल्हाड़ी जो अहंकार का बन्धन काटती है
- प्रधान श्लोक-सीमा: स्कन्ध 11, अध्याय 12, श्लोक 1-24
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण



पिछले अध्याय का सन्दर्भ

अध्याय 11 में, भगवान् ने बन्धन तथा मुक्ति सम्बन्धी उद्धव के प्रश्न का उत्तर दिया, एक वृक्ष पर दो पक्षियों की उपमा दी, बताया कि मुक्त आत्मा संसार में अछूती कैसे रहती है, सच्चे साधु के लक्षण खींचे, और प्रेममयी भक्ति के अनेक रूप प्रकट किए। उन्होंने भक्ति की ओर संकेत करते हुए समापन किया, जिसके पूर्व सन्तों का संग है, उन तक पहुँचने का सबसे निश्चित मार्ग। यह अध्याय उसी सूत्र को उठाकर सत्संग की महिमा गाता है।

सत्संग भगवान् को प्राप्त कराता है

भगवान् ने आरम्भ में घोषित किया कि कोई साधन, चाहे कितना ही महान् हो, उन्हें किसी भक्त से उतना नहीं बाँधता जितना सन्तों का संग बाँधता है।

श्रीभगवानुवाच

न रोधयति मां योगो न साङ्ख्यं धर्म एव च ।

न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तं न दक्षिणा ॥ १ ॥

व्रतानि यज्ञश्छन्दांसि तीर्थानि नियमा यमाः ।

यथावरुन्धे सत्सङ्गः सर्वसङ्गापहो हि माम् ॥ २ ॥

śrī-bhagavān uvāca na rodhayati mām yogo na sāṅkhyam dharma eva ca na svādhyāyas tapas tyāgo neṣṭā-pūrtaṁ na dakṣiṇā vratāni yajñas chandāṁsi tīrthāni niyamā yamāḥ yathāvarundhe sat-saṅgaḥ sarva-saṅgāpaho hi mām

अर्थ: भगवान् ने कहा: न योग, न सांख्य, न धर्म, न शास्त्र-अध्ययन, न तप या त्याग, न यज्ञ या दान, न व्रत, इष्टापूर्त, छन्द, तीर्थ, यम या नियम — इनमें से कोई मुझे उतना निश्चित रूप से प्राप्त नहीं कराता जितना सन्तों का संग, जो प्रत्येक अन्य आसक्ति को घोल देता है। (स्कन्ध 11, अध्याय 12, श्लोक 1-2)

जो केवल संग से उन्हें प्राप्त हुए

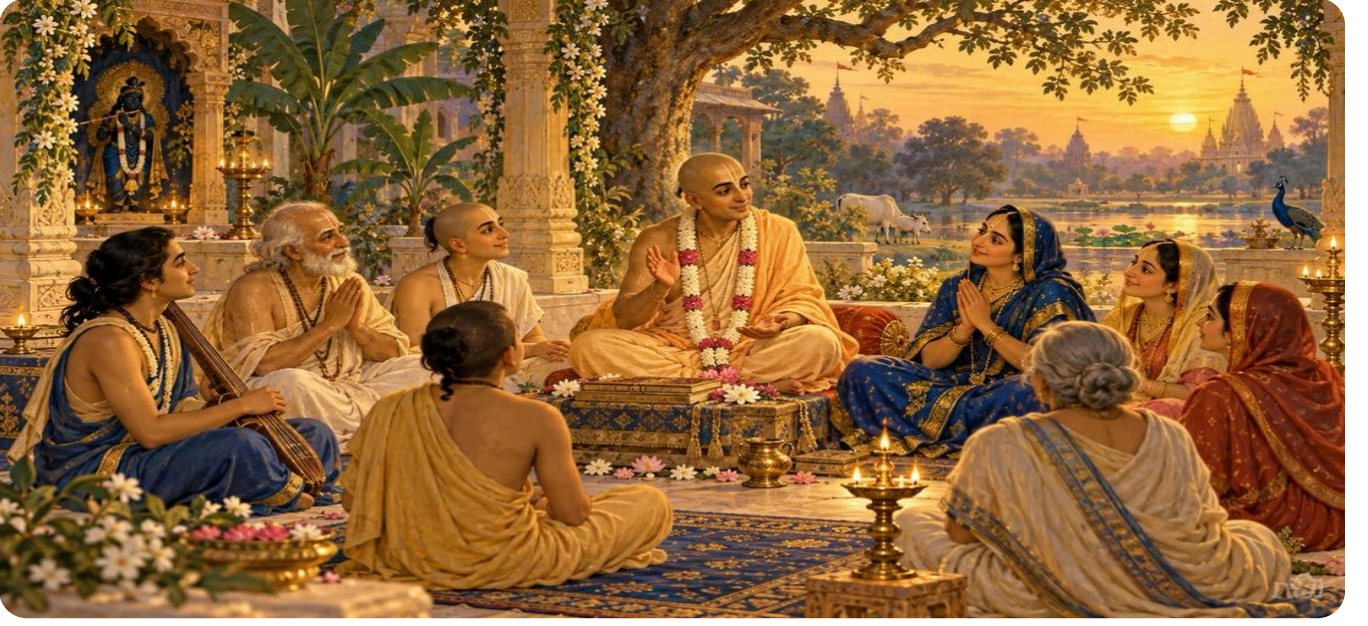
तत्पश्चात् भगवान् ने स्मरण किया कि कैसे युग-युग में, बिना किसी विद्या या योग्यता के साधारण आत्माओं ने केवल सन्तों के संग से उन्हें पाया।

ते नाधीतश्रुतिगणा नोपासितमहत्तमाः ।

अव्रतातप्ततपसः मत्सङ्गान्मामुपागताः ॥ ७ ॥

te nādhīta-śruti-gaṇā nopāsita-mahattamāḥ avratātapta-tapasah mat-saṅgān mām upāgatāḥ

अर्थ: उन्होंने ने न शास्त्रों का अध्ययन किया था, न महात्माओं की सेवा की, न व्रत रखे या तप किया; फिर भी मेरे भक्तों के संग से वे मुझ तक आए। (स्कन्ध 11, अध्याय 12, श्लोक 7)



भगवान् सिखाते हैं कि सन्तों का संग उन्हें सबसे बढ़कर प्राप्त कराता है — अनेक साधारण आत्माएँ, बिना विद्या या तप के, केवल सन्तों के संग से उन तक पहुँचीं (श्लोक 7)।

केवल शुद्ध प्रेम से, उन्होंने कहा, ब्रज की गोपियों, गौओं, वृक्षों तथा हरिणों, और अन्य साधारण प्राणियों ने सहज ही उन्हें प्राप्त किया।

केवलेन हि भावेन गोप्यो गावो नगा मृगाः ।

येऽन्ये मूढधियो नागाः सिद्धा मामीयुरञ्जसा ॥ ८ ॥

kevalena hi bhāvena gopyo gāvo nagā mṛgāḥ ye 'nye mūḍha-dhiyo nāgāḥ siddhā mām iyur añjasā

अर्थ: केवल शुद्ध प्रेम से गोपियों, गौओं, वृक्षों, हरिणों, तथा अन्य साधारण, विद्याहीन प्राणियों ने सहज ही मुझे प्राप्त किया। (स्कन्ध 11, अध्याय 12, श्लोक 8)



केवल शुद्ध, सम्पूर्ण-हृदय प्रेम से, भगवान् स्मरण करते हैं, व्रज की गोपियों तथा वन के साधारण प्राणियों ने भी सहज ही उन्हें पा लिया (श्लोक 8)।

गोपियों का अपार प्रेम

भगवान् ने कोमलता से स्मरण किया कि कैसे, जब अकूर उन्हें बलराम सहित मथुरा ले गए, तब गोपियाँ अकेली रह गई, उनके मन उनमें प्रेम से इतने बँधे थे कि उनके बिना दिन युगों समान प्रतीत होते थे। उनके हृदय उनमें इतने पूर्णतः लीन थे कि उन्होंने स्वयं तथा संसार का समस्त बोध खो दिया।

ता नाविदन् मय्यनुषङ्गबद्ध-
धियः स्वमात्मानमदस्तथेदम् ।
यथा समाधौ मुनयोऽब्धितोये
नद्यः प्रविष्टा इव नामरूपे ॥ १२ ॥

tā nāvidan mayy anuṣaṅga-baddha- dhiyaḥ svam ātmānam adas tathedam yathā samādhau munayo 'bdhi-toye nadyaḥ praviṣṭā iva nāma-rūpe

अर्थ: मुझमें प्रेम से बँधे मन वाली गोपियों ने स्वयं का तथा संसार का समस्त बोध खो दिया — जैसे गहन समाधि में मुनि नाम-रूप का बोध खो देते हैं, या जैसे समुद्र में मिलती नदियाँ अपनी पृथक्ता खो देती हैं। (स्कन्ध 11, अध्याय 12, श्लोक 12)

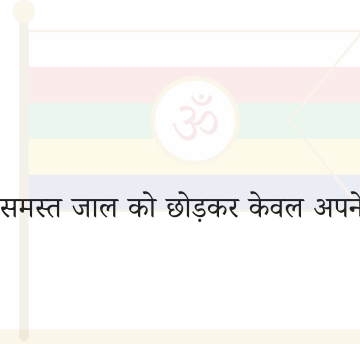
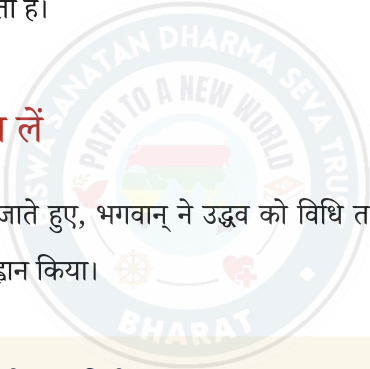


गोपियों के हृदय भगवान् में इतने लीन थे कि उन्होंने स्वयं तथा संसार का समस्त बोध खो दिया — जैसे समुद्र में मिलती नदियाँ अपनी पृथक्ता खो देती हैं (श्लोक 12)।

उनके प्रति प्रेम से पूर्ण, उन्हें अपना परम प्रिय मानकर, इन स्त्रियों ने परम लक्ष्य प्राप्त किया — यह दिखाते हुए कि शुद्ध प्रेम, चाहे जैसे भी उठे, आत्मा को उनसे मिला देता है।

केवल उनकी शरण लें

शिक्षा को हृदय तक ले जाते हुए, भगवान् ने उद्धव को विधि तथा निषेध के समस्त जाल को छोड़कर केवल अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ उनकी शरण लेने का आह्वान किया।



तस्मात्त्वमुद्धवोत्सृज्य चोदनां प्रतिचोदनाम् ।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च श्रोतव्यं श्रुतमेव च ॥ १४ ॥

मामेकमेव शरणमात्मानं सर्वदेहिनाम् ।

याहि सर्वात्मभावेन मया स्या ह्यकुतोभयः ॥ १५ ॥

tasmāt tvam uddhavotsṛjya codanāṁ praticodanām pravṛttiṁ ca nivṛttiṁ ca śrotavyaṁ śrutam eva ca mām ekam eva śaraṇam ātmānaṁ sarva-dehinām yāhi sarvātma-bhāvena mayā syā hy akuto-bhayah

अर्थ: अतः, हे उद्धव, विधि तथा निषेध, जो करने योग्य तथा त्यागने योग्य है, जो अभी सुनना है तथा जो सुना जा चुका है — इन सबको छोड़कर, समस्त प्राणियों की आत्मा मुझ एक की ही शरण अपने सम्पूर्ण हृदय से लो; और मेरी कृपा से तुम समस्त भय से मुक्त हो जाओगे। (स्कन्ध 11, अध्याय 12, श्लोक 14-15)

उद्धव का शेष सन्देह

यह सब सुनकर भी, उद्धव ने सरल ईमानदारी से स्वीकार किया कि एक सन्देह अब भी उनके मन में शेष है और जाता नहीं।

श्रीउद्धव उवाच

संशयः शृण्वतो वाचं तव योगेश्वरेश्वर ।

न निवर्तत आत्मस्थो येन भ्राम्यति मे मनः ॥ १६ ॥

śrī-uddhava uvāca saṁśayaḥ śṛṇvato vācam tava yogeśvareśvara na nivartata ātma-stho yena bhrāmyati me manaḥ

अर्थ: उद्धव ने कहा: हे योगेश्वरों के ईश्वर, आपके वचन सुनते हुए भी, मेरे हृदय में बैठा एक सन्देह जाता नहीं, और मेरा मन व्याकुल रह जाता है।
(स्कन्ध 11, अध्याय 12, श्लोक 16)



सरल ईमानदारी से, उद्धव स्वीकार करते हैं कि भगवान् को सुनते हुए भी, एक सन्देह अब भी उनके हृदय में शेष है और उनके मन को व्याकुल छोड़ देता है (श्लोक 16)।

ज्ञान की कुल्हाड़ी

उत्तर में, भगवान् ने पुनः प्रकट किया कि कैसे परम सबका स्रोत है — वाणी का उसके सूक्ष्म तथा उच्चरित रूपों में, गुणों तथा तत्त्वों का, तथा उस समस्त ब्रह्माण्ड का जो उनमें स्थित है फिर भी उन्हें सीमित नहीं करता। और उन्होंने एक प्रेरक आह्वान से समापन किया: सद्गुरु के प्रति अनन्य समर्पण तथा अविचल भक्ति के बल पर साधक को चाहिए कि वह ज्ञान-रूपी धार को तीक्ष्ण करे, उससे अहं-ग्रन्थि का मूलोच्छेद करे, आत्म-तत्त्व में प्रतिष्ठित हो जाए, और उस साधन को तत्पश्चात् त्याग दे।

एवं गुरुपासनयैकभक्त्या

विद्याकुठारेण शितेन धीरः ।

विवृश्य जीवाशयमप्रमत्तः

सम्पद्य चात्मानमथ त्यजास्त्रम् ॥ २४ ॥

*evam gurūpāsanayaika-bhaktyā vidyā-kuṭhāreṇa śītena dhīraḥ vivṛścyā jīvāśayam apramattaḥ
sampadya cātmānam atha tyajāstram*

अर्थ: इस प्रकार, गुरु की सेवा तथा एकनिष्ठ भक्ति से, धीर साधक ज्ञान की तीक्ष्ण कुल्हाड़ी से सावधानीपूर्वक अहंकार के बन्धन को काटे, आत्मा को प्राप्त करे, और फिर उस अस्त्र को रख दे। (स्कन्ध 11, अध्याय 12, श्लोक 24)



भगवान् साधक को आह्वान करते हैं कि भक्ति तथा गुरु-सेवा से जगी ज्ञान की तीक्ष्ण कुल्हाड़ी उठाए, अहंकार के बन्धन को काटे तथा आत्मा को प्राप्त करे (श्लोक 24)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सन्तों का संग भगवान् को सबसे बढ़कर प्राप्त कराता है। कोई भी साधना-मार्ग — योग, शास्त्र-अध्ययन, तपस्या, यज्ञ अथवा व्रत — भगवान् को किसी भक्त से उतने निकट नहीं लाता जितना सज्जनों की संगति, जो शेष समस्त सांसारिक मोह को क्षीण कर देती है (श्लोक 1-2)।
2. शुद्ध प्रेम ही एकमात्र आवश्यक वस्तु है। गोपियों, गौओं, वृक्षों तथा हरिणों ने केवल प्रेम से, बिना विद्या या तप के, भगवान् को पाया — यह दिखाते हुए कि प्रेममय हृदय उन्हें किसी योग्यता से अधिक प्रिय है (श्लोक 7-8)।
3. सम्पूर्ण-हृदय लीनता हमें उनसे मिला देती है। गोपियाँ उनके स्मरण में इतनी निमग्न हो गईं कि देह-भान एवं जगत्-बोध दोनों उनसे सर्वथा विलीन हो गए, ठीक वैसे ही जैसे नदियाँ अपनी पृथक् सत्ता खोकर सागर में समा जाती हैं — यही प्रेम में आत्मा के पूर्ण मिलन का सजीव चित्रण है (श्लोक 10-13)।

4. केवल उनकी शरण लें। करने-न करने के अन्तहीन जाल को छोड़कर, मनुष्य को अपने सम्पूर्ण हृदय से भगवान् की शरण लेनी चाहिए; उस शरण में समस्त भय घुल जाता है (श्लोक 14-15)।

5. भगवान् के समक्ष ईमानदार सन्देह स्वागत योग्य है। उद्धव अपने शेष भ्रम को छिपाते नहीं, अपितु उसे खुलकर भगवान् के समक्ष रखते हैं, और उसका उत्तर फटकार से नहीं, अपितु धैर्यपूर्ण उपदेश से मिलता है (श्लोक 16)।

6. भक्ति से जगा ज्ञान अहंकार का बन्धन काटता है। भक्ति तथा गुरु के मार्गदर्शन से सेवित, ज्ञान की तीक्ष्ण कुल्हाड़ी अहंकार की जड़ को काट देती है, और मुक्त आत्मा आत्मा में विश्राम करती है (श्लोक 17-24)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

भगवान् की समस्त शिक्षाओं में, कुछ ही इतनी उत्साहवर्धक हैं जितनी यह। उद्धव को दर्शन की ऊँचाइयों से ले जाकर — प्रकृति के गुण, आत्मा तथा उसका बन्धन, वृक्ष पर दो पक्षी — अब वे इन सबको एक सरल, कोमल सत्य के साथ रख देते हैं: कि उन तक पहुँचने का सबसे निश्चित मार्ग प्रतिभा या तपस्या नहीं, अपितु उनका संग जो उनसे प्रेम करते हैं, तथा एक हृदय जो बदले में उनसे प्रेम करता है। वे उन ऋषियों की ओर संकेत नहीं करते जिन्होंने शास्त्रों में महारत पाई, अपितु ब्रज की गोपियों की ओर, जिन्होंने एक पंक्ति भी नहीं पढ़ी, फिर भी अपनी तड़प के बल मात्र से उन्हें पा लिया। यहाँ प्रत्येक साधारण भक्त के लिए गहरी सान्त्वना है। हम स्वयं को अनपढ़, अयोग्य, महान् तपस्या में असमर्थ अनुभव कर सकते हैं — और भगवान् कोमलता से हमें बताते हैं कि इनमें से कुछ भी हमारे तथा उनके बीच खड़ा नहीं। जो वे माँगते हैं, वह एक प्रेममय हृदय तथा उत्तम संग है: उनका संग रखना जो उन्हें प्रिय मानते हैं, उनके मध्य उनका नाम सुनना तथा गाना, और उस प्रेम को हमें वैसे ले जाने देना जैसे नदियाँ समुद्र तक ले जाई जाती हैं। और जब, उद्धव के समान, हम पाते हैं कि सुनते हुए भी सन्देह शेष रह जाते हैं, तब हमें दिखाया जाता है कि यह भी स्वागत योग्य है — कि हम अपना भ्रम ईमानदारी से उन तक ला सकते हैं, और विश्वास कर सकते हैं कि वे धीरे-धीरे उस ज्ञान को तीक्ष्ण करेंगे जो हमें मुक्त करता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, सन्तों के संग की महिमा का सम्मान कीजिए। थोड़े समय के लिए भी, उनका संग खोजिए जो भगवान् से प्रेम करते हैं — भक्तों की एक सभा में सम्मिलित हों, किसी सन्त के वचन पढ़ें, या किसी प्रिय के साथ उनका नाम बाँटें। यदि कोई संग निकट न हो, तो उन्हें अपने हृदय में रखें, उनकी कथाएँ सुनकर या गाकर, जैसे गोपियों ने उन्हें अपने हृदय में रखा। जैसे आप ऐसा करते हैं, उनके पवित्र नाम का धीरे से जप कीजिए: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” प्रेममय संग की ओर मुड़ने के इस सरल कार्य में, आप इस अध्याय के मर्म का ही अभ्यास करते हैं — सन्तों के संग तथा उससे जगे प्रेम को अपने को, नदी की भाँति समुद्र तक, उनके निकट खींचने देते हुए।

उपसंहार

एकादश स्कन्ध का द्वादश प्रवचन सत्संग की महिमा गाता है। भगवान् उद्धव के समक्ष यह उद्धाटित करते हैं कि सबसे श्रेष्ठ साधना भी उतनी समीपता नहीं दिलाती जितनी निश्छल भक्तजनों की संगति स्वतः दिला देती है। वे स्मरण कराते हैं कि किस प्रकार सहज आत्माएँ — ब्रज की गोपियाँ, गौएँ, वृक्ष तथा मृग — केवल अकृत्रिम प्रेम से उन तक पहुँचीं, और किस प्रकार गोपियों के चित्त उनमें इतने तल्लीन हो गए कि वे देह और जगत् दोनों का भान भूल बैठीं, मानो नदियाँ अपनी पृथक्ता मिटाकर सागर में लीन हो रही हों। वे उद्धव को विधि-निषेध के अन्तहीन जाल को छोड़कर केवल उनकी शरण, अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ, लेने का आह्वान करते हैं, समस्त भय से मुक्त होते हुए। और जब उद्धव के मन

में एक अन्तिम सन्देह शेष रह जाता है, तब भगवान् धैर्यपूर्वक उसका निवारण करते हैं, यह दशाति हुए कि भक्ति और गुरु-सेवा से तराशी गई ज्ञान की पैनी कुल्हाड़ी किस प्रकार अहंकार के बन्धन को काटकर आत्मा को आत्मा में ही विश्रान्त कर देती है। इस प्रकार यह अध्याय हमें भक्ति-मार्ग के दो रत्नों की ओर खींचता है — सन्तों का संग तथा प्रेम से भरा हृदय।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य वाणी हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

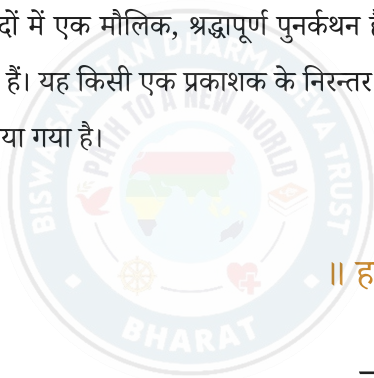
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), एकादश स्कन्ध, द्वादश प्रवचन, पृष्ठ 566–569।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बन्ध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।



॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-11-adhyay-12-satsanga-mahima-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट